वर्ष :: 34 अंक : 02
पृष्ठ : 08 :: मूल्य 2 रुपए मात्र

मिथिला वर्णन
स्वच्छ पत्रकारिता, स्वस्थ पत्रकारिता
झारखंड-बिहार का लोकप्रिय हिन्दी साप्ताहिक

/mithilavarnan

बोकारो :: रविवार, 08 अक्टूबर, 2023 News & E-paper : www.varnanlive.com E-mail : mithilavarnan@gmail.com

पूरे परिवार के लिये आध्यात्मिक पत्रिका
अवश्य पढ़ें-

निखिल-मंत्र-विज्ञान
14ए, मेनरोड, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फोन : (0291) 2624081, 263809

बिहार में 33 वर्षों के बाद जातीय उन्माद का सूत्रपात

- विजय कुमार झा -

जिस बात का अंदेशा था, अब वही होने वाला है। ऐसे संकेत बिहार में नीतीश सरकार द्वारा कराई गई जातीय जनगणना के नतीजों से मिलने लगे हैं। सियासत के धुरंधर खिलाड़ी माने जाने वाले बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने समाज को आपस में बांटने, लड़ाने और अपनी राजनीतिक रोटी सेंकने के मामले में अपने पुराने मित्र लालू प्रसाद यादव को भी पीछे छोड़ दिया है। यही काम इस देश में आजादी से पहले अंग्रेजों ने किया था। नीतीश कुमार भले ही यह कहें कि बिहार में जातीय जनगणना समाज के पिछड़े और दबे-कुचले लोगों सामाजिक न्याय दिलाने के लिए करवाई गई है, लेकिन जातिगत आंकड़ों की पोल खुल जाने के बाद अब यह साफ हो गया है कि नीतीश कुमार ने लालू प्रसाद यादव के साथ मिलकर 33 साल बाद पुनः जातीय उन्माद का सूत्रपात तो कर ही दिया है। इस जातीय जनगणना के खुलासे से बिहार में वंचित समाज को क्या फायदा होगा, यह तो आने वाला वक्त ही बताएगा, लेकिन सामाजिक न्याय के कथित इन पुरोधाओं ने केवल और केवल अपनी राजनीतिक रोटी सेंकने के लिए समाज में जातीय विद्वेष की बुनियाद जरूर रख दी है।

दरअसल, देश में पिछड़ी जातियों को आरक्षण के लिए 1990 में लागू की गई मंडल आयोग की सिफारिशों के 33 साल बाद फिर जातीय राजनीति का नया अध्याय शुरू हो गया है। बिहार में जातीय जनगणना के आंकड़े सामने आने के बाद सियासी पारा चढ़ने लगा है। देश में अंतिम बार अंग्रेजी हुकूमत के दौरान 1931 में जातीय जनगणना के आंकड़े जारी हुए थे। फिर 1941 में जातीय जनगणना तो हुई थी, लेकिन इसके आंकड़े सार्वजनिक नहीं किये गये। अभी तक जो भी सरकारी योजनाएं चल रही हैं, वे 1931 में की गई गणना के आधार पर हैं। इसके पहले वर्ष 2011 में केन्द्र की तत्कालीन यूपीए सरकार ने देश में सामाजिक, आर्थिक, जातिगत सर्वे जरूर कराया था, लेकिन इस प्रक्रिया में हासिल किये गये जाति से जुड़े आंकड़े अब तक जारी नहीं किये गये हैं। जबकि, बिहार की नीतीश सरकार ने सामाजिक ताने-बाने को तोड़ने के लिए वह सब कुछ कर दिखाया है, जिससे आजादी के बाद की सरकारें बचती रहीं।

जाति	आबादी (% में)
यादव	14.26%
रविदास	5.2%
कोइरी	4.2%
ब्राह्मण	3.65%
राजपूत	3.45%
मुसहर	3.08%
भूमिहार	2.86%
कुर्मी	2.80%
मल्लाह	2.60%
बनिया	2.31%
कायस्थ	0.60%

राज्य की कुल आबादी: **13 करोड़**

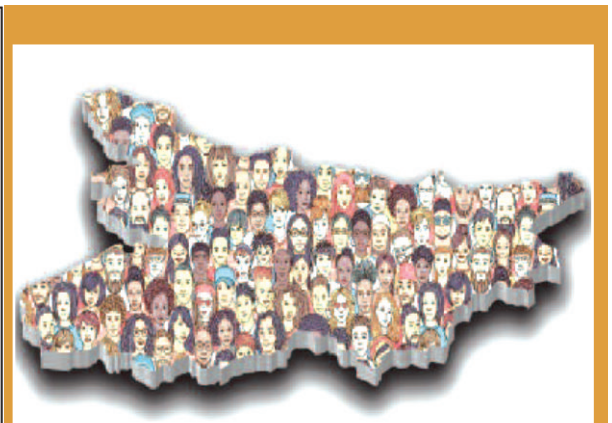

जातीय आंकड़ों की खुली पोल, एक नए घोटाले का आरोप

बिहार की नीतीश सरकार ने जो जो जातीय जनगणना कराई है, उसकी पोल खुलने लगी है। चारा घोटाले की तरह इस गणना में भी घोटाले के आरोप लगले लगे हैं। बिहार सरकार द्वारा जातीय आंकड़ों का खुलासा किये जाने के बाद यह बात सामने आने लगी है कि यह सारा हथकंडा अगले लोकसभा चुनाव में आई.एन.डी.ए. गठबंधन की जीत पक्की कराने के लिए ही अपनाया गया है, क्योंकि बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार इस नए गठबंधन के सर्वमान्य नेता बनने के लिए आतुर हैं। उन्होंने यह साबित भी कर दिया है कि पूरे देश में केवल वही एकमात्र ऐसे नेता है, जो कुर्सी, पद या वोट पाने की खातिर कुछ भी कर गुजर सकते हैं। लेकिन, अब उनके साथ दिक्कत यह होने वाली है कि बिहार की जातीय जनगणना की रिपोर्ट पर सवाल खड़े होने शुरू हो गए हैं। इसे चारा घोटाले से भी बड़ा घोटाला बताया जा रहा है। राज्य सरकार ने इस जातीय जनदणना पर लगभग 500 करोड़ रुपये खर्च करने का दावा किया है, लेकिन जातीय आंकड़ों के खुलासे के बाद इस पर कई तरह के सवाल उठने लगे हैं। बिहार में ज्यादातर लोगों का कहना है कि यह जनगणना कब हुई, कैसे हुई, इसके बारे में उन्हें कुछ भी पता नहीं। हां, उन्होंने लोगों से यह जरूर सुना था कि बिहार में जातीय गणना चल रही है, लेकिन उनसे या उनके मुहल्ले के किसी भी व्यक्ति से कोई भी सरकारी नुमाइंदा इस बारे में कुछ जानने या पूछने नहीं आया। अब इस मामले की सीबीआई जांच की मांग भी उठने लगी है।

लोकसभा चुनाव के मद्देनजर अहम रिपोर्ट

बिहार की जाति जनगणना के ये आंकड़े प्रदेश की राजनीति के साथ-साथ देश की सियासत को भी प्रभावित करने वाले माने जा रहे हैं। दरअसल, इस साल 5 राज्यों के विधानसभा चुनावों के बाद अगले साल 2024 में लोकसभा चुनाव भी होना है। जातिगत सर्वे रिपोर्ट जारी होने के बाद सूत्रों के हवाले से यह दावा भी किया गया है कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की मंशा है कि विपक्षी 'आईएनडीआईए' गठबंधन आगामी लोकसभा चुनाव में इस मुद्दे को प्रमुख एजेंडा बनाए। कहा यह भी जा रहा है कि नीतीश कुमार अपना रुतबा जताने के लिए अगले कुछ दिनों में इस मुद्दे पर विभिन्न दलों के साथ बातचीत कर सकते हैं।

मांझी ने की मंत्रिमंडल बर्खास्त करने की मांग

जीतन राम मांझी ने एक्स पर लिखा कि 'जिसकी जितनी संख्या भारी, मिले उसको उतनी हिस्सेदारी' के तर्ज पर मैं सीएम नीतीश कुमार से आग्रह करता हूं कि राज्य मंत्रिमंडल को बर्खास्त कर संख्या आधारित मंत्री परिषद का गठन करें, जिससे समाज के हर तबके को प्रतिनिधित्व का मौका मिल पाए।

मुसलमान 18%, हिन्दू 82 %

बिहार जातीय जनगणना रिपोर्ट के मुताबिक प्रदेश की कुल आबादी में मुसलमानों की आबादी लगभग 18 प्रतिशत (17.7 फीसदी) है। वहीं हिन्दुओं की जनसंख्या 82 प्रतिशत है।

राज्य में 10 करोड़ से अधिक की आबादी हिन्दुओं की है। समुदायों की बात करें तो जैन समुदाय की जनसंख्या (12523) सबसे कम है। इसके ऊपर सिख (14753), बौद्ध (111201) और ईसाइयों की आबादी 75238 है।

नीतीश को जीतन राम मांझी ने घेरा

जातीय आधारित गणना के सर्वे की रिपोर्ट आने के बाद अब बिहार में सवाल उठने लगे हैं। इसको लेकर 'हम' संयोजक जीतन राम मांझी ने एक्स पर सीएम नीतीश कुमार को घेरा है। मीडिया से बात करते हुए जीतन राम मांझी ने कहा कि 1931 में यादवों की संख्या लगभग 4% थी तो 2023 में यादवों की संख्या 14% कैसे हो गई? जब यादवों की संख्या बढ़ गई तो अन्य जातियों की संख्या घट क्यों गई? उधर, बिहार में जारी किए गए जातीय जनगणना के आंकड़ों पर जदयू के नेता ही सवाल उठाने लगे हैं। ऐसा माना जा रहा है कि बिहार के सीएम नीतीश कुमार ने ओबीसी वर्ग को गोलबंद करने के लिए ये कदम उठाया है। हालांकि आंकड़े सार्वजनिक होने के बाद ओबीसी और ईबीसी में भी नाराजगी देखी जा रही है। जातीय जनगणना से कई जातियां खुश नहीं हैं। जदयू के भीतर ही प्रदेश महासचिव ने जाति गणना के तौर तरीकों पर सवाल उठा दिया है। ऐसे में अन्य जातियों द्वारा उठाई गई मांग धरातल पर जोर पकड़ने लगी है। सवाल उठने लगे हैं कि नीतीश और लालू प्रसाद का अंतिम अस्त्र कारगर होने से पहले ही टांय-टांय फिस्स साबित होने लगा है। राजनीति की रणनीति में महारथी कहे जाने वाले प्रशांत किशोर ने इसे नीतीश कुमार सरकार का अंतिम अस्त्र कहा है। जाहिर है, प्रशांत किशोर मानते हैं कि यह धरातल पर जदयू के पक्ष में नहीं गया तो जदयू का बिखरना तय है। दरअसल, प्रशांत किशोर लंबे समय से कहते आ रहे हैं कि जदयू की स्थितियां बिहार में बद से बदतर हो चुकी हैं। जाति जनगणना को लेकर नीतीश कुमार का दांव फेल हुआ तो नीतीश राजनीतिक अस्थिरता के परफेक्ट उदाहरण बनने की वजह से लोकसभा में चार सीटें जीत पाने में भी सफल नहीं हो सकेंगे।

नीतीश सरकार के जातीय आंकड़े

बिहार सरकार द्वारा कराई गई जातीय जनगणना के ताजा आंकड़ों के अनुसार बिहार में राजपूत 3.4 फीसदी, भूमिहार 2.8 फीसदी, ब्राह्मण 3.6 फीसदी और कायस्थ 0.60 फीसदी हैं। इन आंकड़ों से कहा जा सकता है कि बिहार में भूराबाल (लालू प्रसाद का पुराना फारमूला) साफ हो गया है। इनके अलावा नोनिया 1.9 फीसदी, कुर्मी 2.8 फीसदी, कुशवाहा 4.27 फीसदी, धानुक 2.13 फीसदी जैसे आंकड़े बिहार जाति जनगणना की रिपोर्ट से निकले हैं। इन आंकड़ों में गौर करने लायक यह है कि सभी 10 फीसदी से कम, यानी इन जातियों की आबादी दहाई में भी नहीं है। वहीं, इन सबके उलट बिहार में सिर्फ एक ऐसी जाति का आंकड़ा सामने आया है, जो तमाम सवर्ण हों या गैर-सवर्ण, सभी जाति या उपजातियों की संख्या पर भारी है। बिहार कास्ट सेंशस की रिपोर्ट पर गौर करें तो समझ गए होंगे कि प्रदेश में सिर्फ एक ही जाति है, जो आबादी की दृष्टि से सबसे प्रभावशाली मानी जा सकती है। इस जाति का नाम है यादव, जिसकी जनसंख्या बिहार में 14.26 फीसदी है। बिहार जातिगत सर्वेक्षण की रिपोर्ट के मुताबिक प्रदेश में पिछड़ा वर्ग के 27.12 प्रतिशत, अति पिछड़ा वर्ग 36.01 फीसदी और 15.52 फीसदी आबादी अन्य पिछड़ों की है। वहीं अनारक्षित वर्ग यानी सवर्णों की कुल आबादी 15.52 फीसदी है। मतलब यह कि बिहार में जनसंख्या के आधार पर यादव और सवर्णों की भागीदारी लगभग बराबर है। हालांकि, इस जातीय गणना के तरीकों पर कई सवाल भी उठने लगे हैं और बहुत सारे लोगों की राय में इस गणना में फर्जी आंकड़े दिखाये गए हैं।

- संपादकीय -

सियासी समीकरण में उलटफेर के संकेत

बिहार में जातीय आधारित गणना की रिपोर्ट बाहर आने के बाद अब कई तरह के सवाल उठने लगे हैं। राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री एवं हिंदुस्तानी अवाम मोर्चा के संयोजक जीतन राम मांझी ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को ही कटघरे में खड़ा कर दिया है। उनका कहना है कि 1931 में बिहार में यादवों की संख्या लगभग चार फीसदी थी तो 2023 में यह संख्या 14 फीसदी कैसे हो गई? अगर यादवों की संख्या बढ़ गई तो फिर अन्य जातियों की संख्या क्यों घट गई? मांझी ने 'जिसकी जितनी संख्या भारी, मिले उसको उतनी हिस्सेदारी' के तर्ज पर मुख्यमंत्री से राज्य मंत्रिमंडल को बर्खास्त कर संख्या आधारित मंत्री परिषद का गठन करने की मांग की है, ताकि समाज के सभी तबके को प्रतिनिधित्व का मौका मिले। उधर, बिहार में जाति आधारित गणना की रिपोर्ट आने के बाद यादव कई राजनीतिक दलों के निशाने आ गए हैं। दरअसल, नीतीश सरकार के मंत्रिमंडल में 31 मंत्रियों में से 7 यादव समुदाय से हैं। यादव समुदाय से आने वाले मंत्रियों के पास सरकार के 10 बड़े विभाग हैं, जिसका बजट करीब 39 प्रतिशत है। यादव कोटे से बने मंत्रियों के पास स्वास्थ्य, शिक्षा, पथ निर्माण, पीएचईडी, ग्रामीण कार्य, वन, ऊर्जा, सहकारिता जैसे बड़े विभाग हैं। वहीं, सोशल मीडिया पर आबादी के हिसाब से हिस्सेदारी पर भी बवाल मचा हुआ है। लोगों का कहना है कि मुसलमानों से कम आबादी होने के बाद भी यादवों के विधायक और मंत्री ज्यादा कैसे हैं? असदउद्दीन की पार्टी एआईएमआईएम के विधायक ने मुसलमानों में पिछड़े वर्ग की जातियों के लिए अलग से आरक्षण व्यवस्था की मांग कर दी है। सर्वे रिपोर्ट आने के बाद जिस तरह से सोशल मीडिया से लेकर सत्ता के गलियारों तक बयानबाजी हो रही है, उससे तो यही सवाल उठ रहा है कि क्या आने वाले समय में बिहार की सियासत में राजद, खासकर यादवों का तनाव बढ़ सकता है? इसके पीछे बड़ा कारण यह है कि वर्ष 2004 में भी यादवों के खिलाफ इसी तरह की सुगबुगाहट शुरू हुई थी। उन दिनों लालू यादव के खिलाफ कुर्मी-कोइरी ने गठबंधन कर लिया था। दोनों समुदाय की आबादी करीब 7 फीसदी के आसपास थी। उस समय रैली में दोनों समुदाय ने यादव सत्ता को उखाड़ फेंकने का आह्वान किया था। इन जातियों का आरोप यह था कि संख्या बल के आधार पर यादव अन्य जातियों के साथ हकमारी कर रहा है। यही कारण था कि ओबीसी की अधिकांश जातियां इस गठबंधन के साथ हो गईं और इसका नतीजा यह हुआ कि वर्ष 2005 में लालू यादव की 15 साल की सत्ता उनके हाथ से निकल गई। प्राप्त आंकड़ों के अनुसार बिहार में पिछड़े और अति पिछड़े वर्ग की 90 प्रतिशत जातियों की संख्या 1 प्रतिशत से भी कम है। इन जातियों को अगर मिला दिया जाए तो यह लगभग 20 प्रतिशत के आसपास है। जबकि, यादव समाज के लोग लालू यादव की पार्टी (राजद) के कट्टर मतदाता माने जाते हैं। ऐसे में भाजपा इसके खिलाफ सभी कम आबादी वाली जातियों को गोलबंद करने की रणनीति पर काम कर सकती है। अब अगर सभी जातियां गोलबंद हो गईं तो बिहार के सियासी समीकरण में बड़ा उलटफेर हो सकता है। ऐसे में नीतीश-लालू की जोड़ी की यह नई चाल कहीं आने वाले दिनों में उन पर भारी न पड़ जाय।

आप अपने विचार अथवा अपनी रचनाएं हमें निम्नलिखित ई–मेल पर भेज सकते हैं–
mithilavarnan@gmail.com, Contact : 9431379234
Join us on /mithilavarnan
Visit us on : www.varnanlive.com
(किसी भी कानूनी विवाद का निबटारा केवल बोकारो कोर्ट में ही होगा।)

अब हो सामाजिक न्याय!

- अशोक पांडेय -

बिहार के दो राजनेता क्रमशः लालू प्रसाद यादव और नीतीश कुमार एक ही विचारधारा से जुड़े रहे हैं। इनका राजनीतिक आदर्श भी एक ही जैसा रहा है, क्योंकि दोनों ही धुरंधर नेता समाजवादी सोच के कायल रहे हैं। दोनों को लोकनायक की छत्रछाया में सियासत करने का मौका मिला। एक का शासन तकरीबन 18 साल तक बिहार में रहा और दूसरे का शासन लगभग 15 सालों से चल ही रहा है। इन तीन दशकों से अधिक के शासनकाल में समाजवादी सोच के कायल इन नेताओं ने बिहार में समाजवाद कहां तक लागू किया, इसकी बानगी जाति आधारित जनगणना के नतीजे हैं। इन नतीजों पर गौर करें तो पता चलता है कि सामाजिक न्याय करने वाले नेता अभी भी दिग्भ्रमित हैं, क्योंकि पिछड़े वर्ग (ओबीसी) की आबादी से ज्यादा है बिहार में अत्यंत पिछड़े वर्ग (ईबीसी) के लोगों की संख्या।

अत्यंत पिछड़ों की संख्या जहां 36 फीसदी है, वहां पिछड़ों की आबादी 27 फीसदी के आसपास है। जाहिर है कि समाज के अति पिछड़े वर्ग को सामाजिक न्याय की जरूरत ज्यादा है। इसके अलावा जातियों के समीकरण को दखें तो मुसलमानों के बाद दूसरी सबसे बड़ी आबादी यादवों की बताई गई है। यही सियासत थी लाल प्रसाद की। लालू प्रसाद ने जितने दिनों तक बिहार में शासन किया, उनकी सियासत का मूल आधार एमवाई समीकरण अर्थात मुसलमान-यादव समीकरण ही रहा। इन नतीजों से एक बात और साफ होती है कि जिन जातियों के खिलाफ लालू या उनके लोग जहर उगला करते थे, उनकी संख्या बिहार में औरों की अपेक्षा बहुत कम है। प्रसंगवश लालू के उस महामंत्र को याद किया जा सकता है, जिसमें कुछ लोग कहा करते थे- भूराबाल साफ करो। मतलब भू (भूमिहार), रा (राजपूत), बा (ब्राह्मण) और ल (लाला या कायस्थ) के जरिए कथित तौर पर बिहार की अगड़ी जातियों से पिछड़ी जातियों को लड़ाने की सियासत हो रही थी, लेकिन मौजूदा नतीजे बताते हैं कि इन कथित अगड़ी जातियों का तो वैसे कोई वजूद ही नहीं है। ताजा आंकड़ों के आधार पर पता चलता है कि बिहार में भूमिहारों की आबादी 2.89 फीसदी, राजपूतों की आबादी 3.45 फीसदी, ब्राह्मणों की आबादी 3.67 फीसदी तथा कायस्थों की कुल आबादी महज 0.60 फीसदी ही है। अब भला इतनी कम आबादी वालों के खिलाफ जहर उगलकर बिहार में किस समाजवाद को लाने की लालू वकालत कर रहे थे, यह तो वही जानें, लेकिन इतिहास उनसे जरूर पूछेगा कि यादव और मुसलमानों के अलावा भी बिहार में कुछ लोग थे, जिन्हें अति पिछड़ा कहा जाता है-उनके बारे में राजद की सरकार ने क्या किया?

सामाजिक विभाजन का जरिया

जातिगत जनगणना कराने की योजना नीतीश कुमार के साथ ही भाजपा और लालू की पार्टी ने आपसी विचार-विमर्श से ही तय की थी। इसे पटना हाईकोर्ट की ओर से रोका गया, लेकिन सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर जनगणना हुई तथा अब ये आंकड़े सबके सामने हैं। इस मामले में बिहार देश का पहला राज्य है, जहां जातियों के आधार पर जनगणना कराई गई है। कांग्रेस की ओर से भी पूरे देश में जातिगत जनगणना कराने की घोषणा की जा रही है। लेकिन यहां एक सवाल खड़ा होता है। जनगणना क्या केवल सियासी समीकरण बनाने के लिए होगी अथवा सचमुच जो पिछड़े हैं, उनको न्याय दिलाने के लिए? यदि न्याय दिलाने की बात है तो इसका स्वागत किया जा सकता है, लेकिन केवल सियासी समीकरण की बात हो तो यह समाज को और विभाजित ही करेगा। इन आंकड़ों से बिहार सरकार क्या फैसला लेती है-यह देखना जरूरी होगा।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।)

मैया आबि रहल छथि ना

मैथिली गीत

- शम्भुनाथ -

रुनझुन सुनि के मन अति हरखित
मैया आबि रहल छथि ना।
मैया आबि रहल छथि ना
हे हौदा साजि रहल छन्हि ना।

मायक रूप सोन सन चमकय
सोम वसन छन्हि ना।
माथ किरीट मुकुट अति शोभय
अभय दहिन कर ना।
रुनझुन बाजय पग पैजनियाँ
मैया आबि रहल छथि ना।

साज बाज सब संग क' लेलनि
अस्त्र शस्त्र कर ना।
करथिन त्राण जगत केर माता
असुर नाश कर ना।
हाथे हन हन करइत काता
मैया आबि रहल छथि ना।

हे माता तूँ जग कल्याणी
अघ जग हारी अन्तर्यामी
दास उबारह ना ।
ममतामयी जग त्राण करक हित
आबि रहल छथि ना।।
रुनझुन बाजय पग पैजनियाँ
मैया आबि रहल छथि ना।।

जल जला...

लगातार बारिश से भारी तबाही, दर्जनों बेघर तीन की गई जान

संवाददाता

बोकारो : विगत कुछ दिनों से सोया मॉनसून इस बीच एक बार फिर जाग गया। जागा भी तो ऐसा कि बोकारो में तबाही और आफत की बारिश लेकर आया। तीन-चार दिनों की ही बारिश में जलस्तर काफी अधिक बढ़ गया। लोगों के घरों में पानी घुस गया। दर्जनों लोगों के घर क्षतिग्रस्त हो गए। बारिश के कारण जगह-जगह घर ढ़हने की घटनाएं सामने आईं। सिर्फ कसमार प्रखंड में ही 20 से अधिक लोगों के कच्चे मकान ध्वस्त हो गए। वहीं, कच्चा खपरैल मकान ध्वस्त होने से घर के अंदर रखे अनाज, बर्तन, कपड़े समेत कई सामान बर्बाद हो गए। वहीं, बोकारो थर्मल में भू-स्खलन हुआ। इसमें एक बच्ची सहित दो लोगों की मौत हो गई। चास मुफस्सिल थाना क्षेत्र के धोबनी गांव में लगातार बारिश के कारण मिट्टी के घर की दीवार गिरने से दबकर पांच वर्षीय बच्ची साइन परवीन की मौत हो गई। वहीं, बोकारो थर्मल थाना के सीसीएल कथारा क्षेत्र अंतर्गत गोविंदपुर-स्वांग फेज दो ओपन कास्ट में अत्यधिक बारिश के कारण हुए लैंड स्लाइडिंग में लापता सुरक्षा गार्ड सुबोध कुमार की भी मृत्यु हो गई। घटना के दो दिन बाद सुबोध का शव बरामद किया जा सका। इधर, चास के जोधाडीह मोड़ में लगातार बारिश के कारण एक दुकान की शटर में करंट दौड़ गया, जिसकी चपेट में आने से विष्णु शर्मा (31) नामक एक दुकानदार की मौत हो गई।

इधर, हर साल की तरह मृतप्राय सीवरेज व ड्रेनेज सिस्टम का दंश इस बार भी शहरवासियों को झेलना पड़ा। भीषण बारिश में नालियां और सड़क एक हो गईं। सड़कें तालाब में बदल गईं। सिटी सेंटर, लक्ष्मी मार्केट, रेलवे फाटक सहित कई जगहों पर सड़कों पर काफी जलजमाव हो गया। वहीं, चास और इस्पात नगर के निचले इलाकों में लोगों के घरों में पानी घुस गया। परिजन पानी निकालने में ही परेशान रहे। अभी भी गंदे पानी का रिसाव जारी है। दूसरी तरफ, लगातार बारिश के कारण तेनु डैम का जलस्तर तीन फीट तक बढ़ गया और डैम के चार फाटक खोल दिए गए।

निर्देश तंबाकू नियंत्रण समन्वय समिति की बैठक में किए गए कार्यों की समीक्षा

पंचायतों को बनाएं तंबाकू-मुक्त : उपायुक्त

संवाददाता

बोकारो : सिविल सर्जन कार्यालय के सभागार में जिला स्तरीय तंबाकू नियंत्रण समन्वय समिति की बैठक आयोजित की गई। इसकी अध्यक्षता करते हुए जिले के उपायुक्त कुलदीप चौधरी ने जिले की सभी 249 पंचायतों के साथ-साथ पंचायत भवनों को भी तंबाकू मुक्त बनाए जाने पर जोर दिया। इसके लिए उन्होंने अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिए। बैठक में मुख्य रूप से उप विकास आयुक्त कीर्ति श्री जी., मुख्यालय डीएसपी मुकेश कुमार, सिविल सर्जन डॉ. दिनेश कुमार आदि शामिल हुए। समीक्षा में विगत बैठक में लिए गए निर्णयों एवं उसके अनुपालन पर क्रमवार चर्चा की।

इस क्रम में जिला परामर्शी ने कोटपा-2003 के विभिन्न धाराओं का अनुपालन एवं जिले में तंबाकू नियंत्रण को लेकर किए जा रहे कार्यों के संबंध में विस्तार से बताया। वर्तमान वर्ष में अब तक विद्यालय, कॉलेजों में आयोजित जागरूकता कार्यक्रम, संबंधित अधिकारी, कर्मियों के प्रशिक्षण कार्यक्रम, तंबाकू छोड़ने के लिए काउंसलिंग आदि के बारे में जानकारी दी।

बैठक में जिले के विद्यालयों को शत-प्रतिशत तंबाकू मुक्त शिक्षण संस्थान घोषित करते हुए बोर्ड लगाने का काम पूर्ण करने की बात कही गई। सभी प्रखंड शिक्षा प्रसार पदाधिकारियों से इससे संबंधित प्रमाण पत्र प्राप्त करने को निर्देश दिया। जिले के सभी 249 पंचायतों को भी तंबाकू मुक्त संस्थान घोषित करने के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिया। उन्होंने बैठक में संबंधित प्रखंड विकास पदाधिकारियों को इस संबंध में समन्वय कर कार्रवाई करने एवं जिला परामर्शी को इसे सुनिश्चित करने में प्रखंडों को अपेक्षित सहयोग का निर्देश दिया। समीक्षा के क्रम में उपायुक्त ने कोटपा के तहत विभिन्न थानों के नोडल पुलिस अधिकारियों ने अब तक की गई कार्रवाई, छापा के संबंध में समीक्षा की। उन्होंने इसमें तेजी लाने का निर्देश दिया।

मौके पर उपस्थित मुख्यालय डीएसपी ने कहा कि कई थानों के थाना प्रभारी पिछले दिनों बदले गए हैं, उन्हें एक बार पुनः प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है। इस पर जिला परामर्शी को समन्वय कर प्रशिक्षण सत्र आयोजित करने के लिए कहा गया।

उपायुक्त ने सभी बीडीओ को प्रखंड स्तरीय तंबाकू नियंत्रण समन्वय समिति की बैठक कर इसकी रिपोर्ट जिला को समर्पित करने का निर्देश दिया। मौके पर जिला शिक्षा अधीक्षक मो. नूर आलम खान, बेरमो प्रखंड विकास पदाधिकारी मधु, सभी प्रखंडों के चिकित्सा प्रभारी पदाधिकारी आदि उपस्थित थे।

बेरोजगारी व पलायन बड़ी समस्या : देव शर्मा

दिल्ली में कांग्रेस महासचिव से मिले

संवाददाता

बोकारो : युवा कांग्रेस के झारखंड प्रदेश महासचिव देव शर्मा ने कांग्रेस मुख्यालय, दिल्ली में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव एवं कांग्रेस के वरीय नेता मुकुल वासनिक से मुलाकात कर उन्हें बोकारो और आसपास के इलाके और झारखंड में बेरोजगारी तथा पलायन की समस्या से अवगत कराया।

श्री शर्मा ने कहा कि मुकुल वासनिक हमारे अभिभावक हैं, जिनसें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। वे एक जमीनी नेता हैं, इसलिए हमेशा जमीनी समस्याओं को निकट से जानते हैं, जमीनी नेताओं व कार्यकर्ताओं के सुख दुःख में साथ खड़े रहते हैं। श्री शर्मा ने कहा कि मुकुल वासनिक से हुई मुलाकात के दौरान उन्होंने बोकारो की जन-समस्याएं रखी और उन्हें दूर करने में उनसे मदद का आश्वासन मिला।

युवा नेता देव शर्मा ने कहा कि मैंने भी अपने 14 सालों के संघर्ष और कुछ तकलीफें उनके साथ साझा की। खासकर, यहां की जन-समस्याओं को लेकर उन्होंने अपने स्तर से उन्हें पूरा सहयोग देने का भरोसा दिया है।

उल्लेखनीय है कि विगत एक सप्ताह के भीतर बोकारो जिले पेटरवार, नावाडीह व अन्य प्रखंडों के तीन युवक पलायन की भेंट चढ़ गए।

... तो आंदोलन से बच सकता था बोकारो थर्मल पावर प्लांट

सियासत या हठधर्मिता- पेंशनर मामले में जीच के बाद बनी सहमति

संवाददाता

बोकारो थर्मल : पेंशनरों की कुछ मुद्दों एवं मांगों पर डीवीसी मुख्यालय प्रबंधन ने धनबाद के सांसद पीएन सिंह, निरसा की विधायक अर्पणा सेन गुप्ता के साथ 3 अक्टूबर को तथा 5 अक्टूबर को बेरमो विधायक कुमार जयमंगल सिंह, निरसा के पूर्व विधायक अरुप चटर्जी सहित संयुक्त मोर्चा के प्रतिनिधियों के साथ जो वार्ता की, उसमें समानता देखने को मिलती है। मुख्यालय प्रबंधन ने 3 अक्टूबर को ही समझौता वार्ता कर लिया होता तो तीन दिनों तक डीवीसी के बोकारो थर्मल एवं चंद्रपुरा पावर प्लांट को गेट जाम आंदोलन से बचाया जा सकता था। अब इसके पीछे सियासत मानी जाय या किसी की हठधर्मिता, यह सवाल लाजमी है। 3 अक्टूबर को धनबाद सांसद एवं निरसा विधायक के साथ वार्ता में पेंशनरों के आवास का रेंट में जो 25 गुणा बढ़ोतरी की गई, उसपर मुख्यालय प्रबंधन ने वार्ता में उसे तत्काल प्रभाव से स्थगित कर दिया है। ऐसा ही समझौता 5 अक्टूबर को बेरमो विधायक एवं निरसा के पूर्व विधायक सहित संयुक्त मोर्चा के साथ समझौते में भी किया गया। दोनों ही वार्ता में सांसद एवं विधायक ने पेंशनरों के आवास बढ़ोतरी के 3 अगस्त, 15 अगस्त एवं 18 अगस्त के आदेश को निरस्त नहीं करवाया, बल्कि उसे स्थगित कर दिया गया है। दोनों ही समझौता में त्योहारी सीजन को देखते हुए मामले को स्थगित करने का निर्णय लेकर डीवीसी के मान्यता प्राप्त यूनियन के साथ अन्य यूनियनों के प्रतिनिधि समीक्षा बैठक में तय करेंगे, तब तक पहले की ही तरह रेंट लिया जाएगा। सांसद ने दुकानदारों के मामले में मैटर को रिव्यू करने को लेकर डिस्कस पर रखा। जबकि, बेरमो विधायक के साथ वार्ता में दुकानदारों की दुकान का रेंट 4 रुपये 50 पैसे प्रति स्कावयर फीट ही रखा गया। विधायक के साथ वार्ता में डीवीसी के पेंशनरों को सीपीपीसी की बजाय पूर्व की ही तरह पेंशन का भुगतान करने पर सहमति बनी। साथ ही डीवीसी के प्रोजेक्टों में कार्य करने वाली कंपनियों के नियोजन में राज्य सरकार के 75 फीसदी के फामूर्ले को लागू करने की सहमति बनी। सांसद एवं विधायक दोनों के ही साथ वार्ता में पेंशनरों को लीज पर आवास देने के मसले पर वार्ता नहीं की जा सकी। सांसद के साथ समझौता में संविदा पर कार्य करनेवाले शिक्षकों को स्थायी कामगारों की तरह विस्तारित अवकाश, वेतन एवं पेंशन के मसले पर डीवीसी के नियम एवं शर्तों के आधार पर सहमति बनी। सीएसआर के मसले पर सांसद एवं विधायक दोनों के ही साथ प्रबंधन ने सहमति जतायी। पूरे मामले में डीवीसी प्रबंधन ने ज्यादातर एक ही प्रकार के मसले पर सांसद एवं विधायक दोनों के ही वार्ता कर दोनों को ही संतुष्ट करने का प्रयास किया है, जिसकी परिणति में तीन दिनों तक गेट जाम आंदोलन का दंश भी डीवीसी को झेलना पड़ा।

इधर, उक्त आंदोलन के दौरान बिना किसी अवरोध के 500 मेगावाट के बोकारो थर्मल पावर प्लांट को चलाने में सप्लाई, एएमसी, एआरसी वर्करों ने काफी सराहनीय भूमिका निभाई। डीवीसी के कुछ कामगारों एवं इंजीनियरों ने भी तीन दिनों तक सभी को नेतृत्व वैसी स्थिति में प्रदान किया, जब पावर प्लांट के एचओपी सहित सभी वरीय जीएम, जीएम एवं डीजीएम पावर प्लांट से बाहर हों।

कामयाबी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए दिया जाता है अनुकूल माहौल, मिल रहा लाभ

प्रेरणा... रंग लाई वेदांता ईएसएल की पहल एक्सेल- 30 के 4 छात्र एसएससी में सफल

संवाददाता

बोकारो : औद्योगिक विकास के साथ-साथ वेदांता ईएसएल अपने निगमित सामाजिक दायित्वों की कड़ी में भी नए-नए आयाम जोड़ रहा है। इसी कड़ी में वेदांता ईएसएल की ओर से संचालित प्रेरणा एक्सेल- 30 की पहल रंग लाई है। भारत के अग्रणी इस्पात उत्पादक वेदांता ईएसएल स्टील लिमिटेड को उनके प्रेरणा एक्सेल-30 सेंटर के चार प्रतिभावान छात्रों- विश्वजीत चौधरी, विक्रम कुमार पाठक, चंदन कुमार चौबे और प्रेम कुमार गोप को एसएससी में उल्लेखनीय सफलता मिली है। सभी बोकारो के चंदनकियारी प्रखंड अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्र के हैं। कंपनी ने इस पर गर्व व्यक्त किया है। निगमित संचार अधिकारी तान्या गुप्ता के अनुसार, इन होनहार छात्रों ने एसएससी-जीडी परीक्षा में सफलता के बाद अपना

ज्वाइनिंग लेटर प्राप्त कर एक असाधारण उपलब्धि हासिल की है, जो राष्ट्र के लिए उनकी सेवा की एक नई शुरुआत है। विश्वजीत चौधरी, विक्रम कुमार पाठक और चंदन कुमार चौबे को केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) में सेवा के लिए चुना गया है, जबकि प्रेम कुमार गोप को सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) में शामिल होने का अवसर मिला है। इन प्रतिष्ठित संगठनों में उनका चयन उनके अटूट समर्पण और प्रेरणा एक्सेल-30 सेंटर में प्राप्त कठोर प्रशिक्षण का एक अद्भुत प्रमाण है।

वेदांता ईएसएल का प्रेरणा एक्सेल- 30 सेंटर प्रतिभा को पोषित करने और प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं में उत्कृष्टता प्राप्त करने के इच्छुक उम्मीदवारों के लिए अनुकूल सीखने का माहौल प्रदान करने की अपनी प्रतिबद्धता के लिए प्रसिद्ध है। इन चार छात्रों की सफलता संस्थान द्वारा दी जाने वाली शिक्षा और मार्गदर्शन के उच्च मानक को दशार्ती है।

प्रेरणा एक्सेल- 30 सेंटर के सार्थक सस्टेनेबल डेवलपमेंट फाउंडेशन (एसएसडीएफ) के प्रोजेक्ट को-ऑर्डिनेटर मदन महतो ने उक्त चारों छात्रों की सफलता पर बधाई दी है। उन्होंने कहा कि हमें उनकी उपलब्धियों पर गर्व है और विश्वास है कि वे विशिष्टता के साथ देश की सेवा करना जारी रखेंगे। वेदांता ईएसएल ने विश्वजीत चौधरी, विक्रम कुमार पाठक, चंदन कुमार चौबे और प्रेम कुमार गोप को राष्ट्र के प्रति उनकी सेवा में निरंतर सफलता और गौरवपूर्ण भविष्य की कामना की है।

हफ्ते की हलचल

जिउतिया पर माताओं ने की संतान के दीघार्युत्व की कामना

बोकारो : अपनी संतान की लंबी आयु और खुशहाली के कामना के लिए माताओं ने निर्जला उपवास रखकर विधिवत पूजा-अर्चना की। विभिन्न जलाशयों में स्नान कर पंडितों से कथा का श्रवण किया। टू-टैंक गार्डेन, गरगा नदी, कुलिंग पौंड, गरगा डैम सहित सभी जलाशयों में महिला श्रद्धालुओं ने श्रद्धा भक्ति से स्नान कर पूजा-अर्चना की। जानकारों के अनुसार इस व्रत से संतान प्राप्ति के साथ ही दुख-दर्द व परेशानियों से भी संतान की रक्षा होती है।

केंद्रीय राज्यमंत्री शांतनु का नागरिक अभिनंदन

बोकारो : भारत सरकार के केंद्रीय राज्यमंत्री शांतनु ठाकुर का अखिल भारतीय अग्रवाल कल्याण महासभा, मारवाड़ी समाज एवं सुदर्शन समाज की ओर से बेरमो के ढोरी ऑफिसर्स क्लब में एक समारोह आयोजित कर उनका अभिनंदन किया गया। इसमें समाज के लोगों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हुए माननीय मंत्री का गर्मजोशी से स्वागत कर अपने समाज की समस्याएं भी रखीं। उन समस्याओं को सुनकर माननीय मंत्री ने समाज की ओर से बताई गई समस्याओं का समाधान करने की दिशा में भरपूर कोशिश किये जाने का आश्वासन दिया। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से बेरमो के पूर्व विधायक योगेश्वर महतो बाटुल, अखिल भारतीय अग्रवाल कल्याण महासभा के अध्यक्ष अनिल अग्रवाल, कृष्ण कुमार चांडक, मारवाड़ी समाज से ओम अग्रवाल, दिलीप गोयल, सुदर्शन समाज के शंकर जी, देवदास जी, विगण सोनी, रोहित मित्तल, चितरंजन अग्रवाल, मितेश गोयनका, अंकित कुमार, सुमित बंसल सहित समाज के सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।

तीन राज्यों के 80 मेधावी विद्यार्थी किए गए सम्मानित

बोकारो : पढ़ाई के साथ-साथ विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा से विद्यालय, राज्य व देश का नाम रोशन करने वाले विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से डीपीएस बोकारो में मेधा सम्मान समारोह का भव्य आयोजन किया गया। समारोह में सत्र 2022-23 में शिक्षा के साथ-साथ विभिन्न क्षेत्रों में बेहतर प्रदर्शन करनेवाले 34 विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। वहीं, डीपीएस बोकारो द्वारा विगत 34 वर्षों से आयोजित की जा रही आर्यभट्ट गणित प्रतियोगिता (एएमसी) के विद्यालयवार एवं ओवरआल 45 विजेताओं को भी पुरस्कृत किया गया। इनमें झारखंड सहित बंगाल और ओडिशा के प्रतिभागी भी शामिल रहे। समारोह के मुख्य अतिथि बोकारो स्टील प्लांट के अधिशासी निदेशक (संकार्य) बीके तिवारी ने विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए विनम्र बनने का संदेश दिया। प्राचार्य डॉ. एएस गंगवार ने बच्चों की प्रतिभा निखारने में विद्यालय की कटिबद्धता व्यक्त की। इस क्रम में बच्चों ने मनभावन सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए तथा विद्यालय की वार्षिक पत्रिका डिप्स रिफ्लेक्शन के 35वें संस्करण का विमोचन किया गया।

डीपीएस चास में दान उत्सव का आयोजन किया गया

बोकारो : दिल्ली पब्लिक स्कूल चास में दान उत्सव का आयोजन किया गया। अपनी वस्तुओं को बांटने से जो खुशी मिलती है, बच्चों ने उसका अनुभव किया। स्कूल में दान उत्सव मनाने का मुख्य उद्देश्य बच्चों में सामाजिक भावना का विकास करना एवं समाज के प्रति उन्हें जागरूक करना था। इसमें विद्यार्थियों ने एक-दूसरे के साथ लंच शेयर किया। कार्यवाहक प्राचार्या दीपाली भुस्कुटे ने कहा कि इससे बच्चों में करुणा और उदारता की भावना पैदा होती है। स्कूल की चीफ मेंटर डॉ. हेमलता एस मोहन ने कहा कि परोपकार की संस्कृति भारत की पहचान है। आज की पीढ़ी और आने वाली पीढ़ी को इससे अवगत कराने के लिए इस प्रकार के कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। कार्यक्रम के दौरान स्कूल के अध्यापक तथा अध्यापिकाओं के साथ-साथ विद्यार्थियों ने संकल्प लिया कि वे कपड़े, खाद्य वस्तुएं, खिलौने, पुस्तके, कॉपियां, बर्तन आदि आवश्यकता की मूलभूत वस्तुएं जरूरतमंदों को दान करेंगे। कार्यक्रम के सफल आयोजन पर डायरेक्टर नवीन शर्मा, डीन जोस थॉमस, डीएस मेमोरियल सोसाइटी के सचिव सुरेश अग्रवाल ने पूरे विद्यालय परिवार को बधाई दी।

नारी शक्ति वंदन अधिनियम

से महिलाओं के नेतृत्व में विकास सुनिश्चित

"आज जब महिलाएं हर सेक्टर में तेजी से आगे बढ़ रही हैं, नेतृत्व कर रही हैं, तो बहुत आवश्यक है कि नीति-निर्धारण में, पॉलिसी मेकिंग में हमारी माताएं, बहनें, हमारी नारी शक्ति अधिकतम योगदान दें, ज्यादा से ज्यादा योगदान दें। योगदान ही नहीं, वे महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं।"

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

नारी शक्ति वंदन अधिनियम: देशभर में खुशी की लहर

- नारी शक्ति वंदन अधिनियम से भारत ने महिला सशक्तिकरण की दिशा में बढ़ाए **मजबूत कदम**।
- लोक सभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33% सीटों ने उनकी **आवाज़ को सशक्त बनाया**।
- आरक्षित कोटे के अंतर्गत **अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति की महिलाओं के लिए आरक्षण**।
- यह अधिनियम **लैंगिक समानता** और **समावेशिता** के प्रति प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।
- यह कानून **महिला नेतृत्व को बढ़ावा** देता है और महत्वपूर्ण निर्णय लेने में महिलाओं के लिए मार्ग प्रशस्त करता है।

निरंतर आगे बढ़ती नारी शक्ति

- रक्षा सेवाओं में **महिला अधिकारियों** को **स्थायी कमीशन** प्रदान किया गया।
- **सैनिक स्कूल अब लड़कियों के लिए भी खुले**।
- **सशस्त्र बलों** ने **राष्ट्रीय रक्षा एकेडमी (एनडीए) में महिला उम्मीदवारों** के लिए प्रवेश खोले।
- जम्मू-कश्मीर में नियंत्रण रेखा पर **पहली बार** राइफल महिलाओं की तैनाती।
- **दुनिया भर में सबसे ज़्यादा महिला पायलट भारत में हैं।**
- **100** से अधिक **महिलाओं** ने **चंद्रयान-3** मिशन को अंजाम देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- भारत में **एसटीईएम** (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित) **स्नातकों** में से **43%** महिलाएं हैं, जो दुनिया में सबसे ज़्यादा है।

महिलाओं को सुविधा, सुरक्षा और सम्मान

स्टैंड-अप इंडिया
81% लोन महिलाओं को, समावेशी आर्थिक विकास हुआ सुनिश्चित।

पीएम मुद्रा योजना
लगभग **70% खाते** महिला उद्यमियों के हैं।

पीएम जनधन योजना
56% जनधन खाते महिलाओं के नाम पर हैं, जो महिलाओं की वित्तीय स्वतंत्रता सुनिश्चित करते हैं।

जल जीवन मिशन
13 करोड़ से अधिक नल से जल कनेक्शन **ग्रामीण जीवन में बदलाव** ला रहे हैं।

उज्ज्वला योजना
लगभग 10 करोड़ एलपीजी गैस कनेक्शनों ने महिलाओं को खाना पकाने का धुआं-मुक्त वातावरण प्रदान किया।

पीएम आवास योजना - ग्रामीण
लगभग **2.5 करोड़ पीएम आवास-ग्रामीण** घरों में से 70% का स्वामित्व महिलाओं के पास।

26 सप्ताह की पेड मैटरनिटी लीव
भारत वैश्विक स्तर पर **सबसे लम्बे सवेतन** मातृत्व अवकाशों में से एक प्रदान करता है, इसे 12 सप्ताह से बढ़ाकर 26 सप्ताह कर दिया गया है।

तीन तलाक ख़त्म
तीन तलाक की प्रथा समाप्त कर **मुस्लिम महिलाओं** की गरिमा सुनिश्चित की गई।

cbc 22201/13/0065/2324

चेतना ही शक्ति का जीवंत स्वरूप

गुरुदेव श्री नंदकिशोर श्रीमाली

नवरात्रि का महापर्व आ रहा है। आप सभी शक्ति साधना के लिए तत्पर हैं और आप सभी की यही मनोकामना है कि मैं शक्ति से परिपूर्ण रहूं और मूल प्रार्थना में यही भाव रहता है कि *सवार्बाधा प्रशमनं त्रैलोक्यास्यखिलेश्वरी...,* सारी बाधाओं का शमन हो और *रूपं देहि जय देहि यशो देहि द्विषो जहि...,* मुझे रूप, आरोग्य प्राप्त हो, मुझे हर कार्य में सफलता प्राप्त हो, यश की प्राप्ति हो और द्वेष भाव की समाप्ति हो, मित्रों में अभिवृद्धि हो, सब मेरे सहयोगी हों। इतनी ही है आपकी कामना। आपकी सारी कामनाओं का पूरा चक्र इन चार बातों में परिपूर्ण हो जाता है।

आप देवी की स्तुति करते हैं, शक्ति की स्तुति करते हैं, प्रार्थना करते हैं, मंत्र बोलते हैं और देवी प्रार्थना में एक विशेष मंत्र है- *या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।*

भावार्थ है- हे देवी! आप सभी प्राणियों में चेतना रूप में विद्यमान हैं। मेरी भी चेतना सब प्रकार से जागृत हो। शक्ति का यह स्वरूप 'चेतना' सबसे महत्वपूर्ण है। 'चेतना' से ही आप सभी संसार सागर में चल रहे हैं। जहां चेतना समाप्त हुई, वहां और अचेतना अर्थात बेहोशी, जैसे आप गहरी नींद में हों। मस्तिष्क उस समय भी चल रहा है, लेकिन उस समय चेतना शांत है, विश्राम की स्थिति में है। जाग कर ही सारे कार्यों को संपादित, प्रकाशमयी किया जाता है। इसीलिए सूर्योदय की इतनी महत्ता है। अर्थात दिवस प्रारंभ होते ही हम चेतना से युक्त होकर अपने कार्यों में संलग्न हो जाते हैं। इस अनुसार संसार की सबसे महत्वपूर्ण शक्ति चेतना ही है। वह चेतना ही आपसे सारे कार्य संपादित कराती है।

अब विशेष बात क्या है? हर व्यक्ति यह सोचता है कि वह चेतना से युक्त है। यदि आप संपूर्ण रूप से चेतना से युक्त हैं तो फिर गुरु आपको गुरु मंत्र के साथ चेतना मंत्र और गायत्री मंत्र क्यों प्रदान करते हैं? इसके पीछे सरल बात यह है कि आपकी चेतना में निरंतर और निरंतर अभिवृद्धि हो। क्योंकि, चेतना ही संसार में शक्ति का जीवंत स्वरूप है। जिस प्रकार हम शक्ति को, दुर्गा को देख नहीं पाते हैं, उसी प्रकार आप चेतना को देख नहीं सकते हैं। चेतना की निरंतर और निरंतर अनुभूति होती है।

संसार के सारे मंत्र, वचन, वर्ण चेतना का ही प्रकट स्वरूप है। जो हम बोलते हैं, सुनते हैं, जो हम प्रार्थना करते हैं, वह भी चेतना का ही स्वरुप है। इसी चेतना के कारण हम अपने जीवन में संकल्पबद्ध होते हैं। एकाग्र भाव में वृद्धि होती है और हम अपने कार्यों को पूर्णता की ओर ले जाते हैं।

यह चेतना शाश्वत है और इस चेतना को हमने नित्य प्रति के जीवन में उपयोग नहीं लिया तो हमारी चेतना शक्ति मंद पड़ जाती है, तब हम अपने वाह्य मन से कार्य करते हैं और चेतना तो अंतर्मन की, अचेतन मन की शक्ति है।

आप विचार करो कि आप अपने जीवन में जो भी कार्य करते हैं, वह चेतना से करते हैं या उत्तेजना से करते हैं? चेतना का विलोम है उत्तेजना और उत्तेजना सबसे पहले आपके बाह्य मन, वाणी पर अधिकार जमाती है। चेतनायुक्त व्यक्ति संयमित होता है, उत्तेजना से युक्त व्यक्ति क्रोधित होता है।

इस जीवन में आपकी हजारों मनोकामनाएं हैं और आप उनको पूर्ण करना चाहते हो, तो आप विचार करो कि आपका कार्य चेतना से पूर्ण होंगे, या उत्तेजना से? उत्तेजना आती है, उसके साथ उसका सहोदर क्रोध और ईर्ष्या साथ-साथ आ जाते हैं। आप जहां उत्तेजित हुए, वहां आप अपने मन में क्रोध, ईर्ष्या, लोभ को निमंत्रण दे देते हैं। फिर आपकी उत्तेजना में और अभिवृद्धि होती है और आपका वास्तविक स्वभाव जो चेतना से परिपूर्ण है, वह कहीं खो जाता है।

उत्तेजना और जोश में बहुत फर्क है। चेतनावान व्यक्ति में उत्साह स्वतः स्फूर्त होता है। वह निरंतर और निरंतर प्रकट होता रहता है, जबकि उत्तेजित व्यक्ति में जोश जितनी तेजी से आता है, उतनी ही तेजी से ठंडा भी पड़ जाता है, जितनी तेजी से जीत की भावना आती है, उतनी ही तेजी से हार का भय आ जाता है और हार का भय आपके व्यक्तित्व को जकड़ लेता है।

जब आप चेतना से युक्त होते हैं तो आप अपना कार्य शांत भाव से निरंतर करते हैं और आपको कोई थकान नहीं आती, क्योंकि आप भीतर की शक्ति से सरस होकर कार्य कर रहे हैं। पर उत्तेजना में आप येन केन प्रकारेण अपना कार्य पूरा करना चाहेंगे। दूसरों के सामने अपने आप को बड़ा बताने का प्रयास करेंगे। आप शब्दों का अधिक से अधिक प्रयोग करेंगे। हर बात पर यह विचार करेंगे कि सामने वाले ने मेरे अभियान को ठेस पहुंचाई है और आप उसका प्रतिकार करने लग जाते हैं। इन सबसे आपकी शक्ति संरचनात्मक तो नहीं होती, केवल विध्वंस होता है।

चेतना का अर्थ है- स्वाभिमान और क्या आपका स्वाभिमान इतना हल्का है कि कोई दो वचन कह दे या आपके अनुकूल कार्य नहीं हो तो आपका स्वाभिमान हिल जाता है? स्वाभिमान को जागृत रखना है और इसको जागृत करने के लिए उत्तेजना नहीं, चेतना चाहिए। संसार की सारी व्याधियों की जड़ मनुष्य की उत्तेजना ही है। यह उत्तेजना आपको हर बार एक जीवन संग्राम में एक रेस में डाल देती है। उत्तेजना एक ऐसा रक्त बीज है, जो बढ़ता ही जाता है। उस उत्तेजना को केवल और केवल दैवीय शक्ति, जो आपके भीतर निरंतर विद्यमान है, उसे चैतन्य कर, जागृत कर आप अपनी उत्तेजना पर नियंत्रण कर सकते हैं।

यदि आपकी चेतना शक्ति कमजोर है तो आपका ईश्वरीय शक्ति से संबंध कमजोर हो गया है और सांसारिक शक्तियां आपको इधर-उधर धकेल रही हैं। आपको अपनी चेतना शक्ति को तीव्र बनाना है और इसके लिए साधना ही श्रेष्ठतम मार्ग है। उन क्षणों में आप अपने मन को एकाग्र कर सकते हैं, अपनी बिखरी शक्तियों को एकाग्र कर सकते हैं। आप अपने लक्ष्य, अपने कार्य, अपनी विद्या और अपने क्षोभ पर भी पुनर्विचार कर सकते हैं कि मेरे पास यह शक्ति है और मैं अपनी शक्ति का किस प्रकार से श्रेष्ठतम उपयोग करूं, जिससे मेरा मन प्रसन्न रहे, मेरा शरीर स्वस्थ रहे और मैं स्वाभिमान से युक्त रहूं। सबसे पहले अपने आप को जानना है। जो अपने आप को जानता है, वह संसार को जान लेता है और जो बाकी संसार को जानता है और अपने अंतर मन को नहीं जानता है, वह सदैव उत्तेजनावश रहता है, क्षोभ से युक्त रहता है।

क्षोभ का अर्थ है- जो मुझे मिलना चाहिए था, वह मुझे नहीं मिला और उसका प्रकटीकरण होता है क्रोध के रूप में। आपको क्रोधित नहीं, शांत व्यक्तित्व बनना है। शांत व्यक्तित्व में ही शौर्य प्रस्फुटित होगा और आप अपने हृदय कमल के आनंद को अनुभव कर पाएंगे। प्रयास करें, कुछ क्षण अपने अंतर्मन में, अपनी चेतना के साथ एकाकार हों।

(साभार : निखिल मत्र विज्ञान)

दमकती त्वचा चाहिए तो बादाम तेल लगाएं, जानिए फायदे

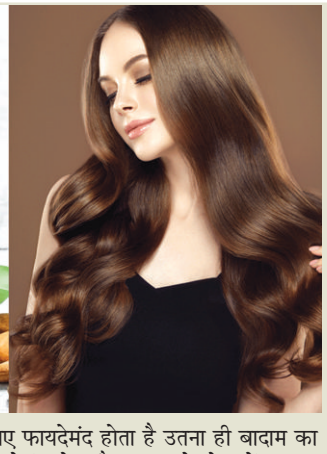

बादाम खाना जितना शरीर के लिए फायदेमंद होता है उतना ही बादाम का तेल भी हमारी सेहत के लिए फायदेमंद होता है। बादाम के तेल में विटामिन ए,बी और ई पोषक तत्व पाएं जाते है। बादाम के तेल का रोजाना प्रयोग करने से हमारा शरीर तंदुरुस्त रहता है। बादाम खाने से दिमाग तेज होता है। बादाम के तेल का रोजाना प्रयोग बुद्धि और नसों के लिए फायदेमंद साबित हुआ है।

आइए जानते हैं बादाम तेल के फायदे-

1. बादाम के तेल से सिर पर मालिश करने से बालों की समस्या दूर होती है। बाल झड़ना बंद हो जाते है।

2. बादाम के तेल से चेहरे पर मसाज करने से त्वचा में चमक आ जाती है।

3. बादाम के तेल का प्रयोग आंखों के आसपास हुए काले-घेरों के लिए भी लाभकारी है। बादाम के तेल से आंखों के आसपास मसाज करनी चाहिए।

4. बादाम के तेल का प्रयोग रोजाना करने से त्वचा का रंग भी निखर जाता है।

5. बादाम के तेल का प्रयोग करने से पेट के कई रोगों से छुटकारा पाया जा सकता है।

6. बादाम के तेल का प्रयोग करने से चेहरे में झुर्रियां जल्दी नहीं पड़तीं।

7. अगर नाखून ठीक से नहीं बढ़ रहे तो बादाम के तेल से मसाज करनी चाहिए।

8. अगर शरीर पर कोई घाव हो जाए तो बादाम के तेल का प्रयोग घाव पर करना चाहिए।

9. बादाम के तेल का प्रयोग फटे होठों के लिए भी लाभकारी होता है।

10. बादाम के तेल की मालिश युवतियों अपने स्तनों के बढ़ाव के लिए भी कर सकती है।

11. बादाम के तेल से सिर पर मालिश करने से बाल लंबे, घने हो जाते है।

- प्रस्तुति : शशि

नई ऊंचाइयों पर बीएसएल, बने नए कीर्तिमान

कार्यालय संवाददाता

बोकारो : चालू वित्तीय वर्ष की प्रथम छमाही के साथ-साथ सितम्बर, 2023 माह में बोकारो स्टील प्लांट ने अपने प्रदर्शन के स्तर में उल्लेखनीय बेहतरी लाते हुए नई ऊंचाइयों को छुआ है। इस अवधि में उत्पादन, डिस्पैच सहित प्रमुख टेक्नो-इकोनॉमिक पैरामीटर्स में कई नए रिकॉर्ड बने हैं।

सितम्बर, 2023 माह में ओवेन पुशिंग में लक्ष्य का 100%, सिंटर उत्पादन में लक्ष्य का 106%, एसएमएस-2 एंड सीसीएस (क्रूड स्टील उत्पादन) में लक्ष्य का 106%, एचआर प्लेट / शीट में लक्ष्य का 101% उत्पादन, सीआरएम-3 (सी आर सेलेबल) में लक्ष्य का 100%, एचडीजीएल-3 में लक्ष्य का 101% तथा बैफ (यू / एल) में लक्ष्य का 113% हासिल किया गया। सितम्बर, 2023 माह में नए मासिक उत्पादन रिकॉर्ड भी बने, जिनमें सीआर सेलेबल उत्पादन (सीआरएम-3) 73,221 टन, 11,516 टन सेलेबल स्टील का रोड डिस्पैच तथा टेक्नो-इकोनॉमिक पैरामीटर्स में स्पेसिफिक पावर कन्सम्शन 380 केडब्लूएच प्रति टीएसएस शामिल है। इसके अलावा सितम्बर, 2023 माह में ब्लास्ट फर्नेस में कुल 1216 टन सीडीआई इंजेक्शन का नया दैनिक रिकॉर्ड भी बना।

दैनिक एवं मासिक रिकॉर्ड के अलावा चालू वित्तीय वर्ष की प्रथम छमाही में भी बोकारो स्टील प्लांट ने कई नए रिकॉर्ड बनाए। इनमें प्रमुख तौर से 2297290 टन हॉट मेटल उत्पादन (चार फर्नेस परिचालन से), 2084404 टन क्रूड स्टील उत्पादन, एसएमएस-न्यू से 401158 टन उत्पादन, 2012159 टन सेलेबल स्टील उत्पादन, 2017258 टन डिस्पैच एवं चार फर्नेस परिचालन से 961738 टन ग्रेनुलेटेड स्लैग डिस्पैच शामिल हैं, जो प्रथम छमाही (एच1) की अवधि में बोकारो स्टील प्लांट की स्थापना काल से अभी तक का सर्वश्रेष्ठ आंकड़ा है। अधिशासी निदेशक (संकार्य) बीरेन्द्र कुमार तिवारी तथा अन्य वरीय अधिकारियों ने इन उपलब्धियों के लिए टीम बीएसएल को बधाई दी है तथा श्रेष्ठता के इस क्रम को जारी रखने का आह्वान किया है।

ब्लास्ट फर्नेस- 1 की मनी स्वर्ण जयंती

पचास वर्ष पूर्व बोकारो इस्पात संयंत्र के ब्लास्ट फर्नेस संख्या-01 की कमीशनिंग हुई और हॉट मेटल का उत्पादन शुरू हुआ। इन पांच दशकों में ब्लास्ट फर्नेस संख्या-01 ने अब तक कुल 33 मिलियन टन हॉट मेटल का उत्पादन किया है और देश की प्रगति में लगातार योगदान करता आ रहा है। 03 अक्टूबर 2022 से 03 अक्टूबर 2023 की अवधि ब्लास्ट फर्नेस संख्या-01 की स्वर्ण जयंती वर्ष के रूप में मनाई गई। इस विशेष अवसर को यादगार बनाने के लिए ब्लास्ट फर्नेस-1 के सामने निर्मित स्वर्ण जयंती पार्क में अधिशासी निदेशक (संकार्य) बीरेंद्र कुमार तिवारी, अधिशासी निदेशक (परियोजनाएं) सी.आर.महापात्रा, अधिशासी निदेशक (सामग्री प्रबंधन) अमिताभ श्रीवास्तव, अधिशासी निदेशक (कार्मिक एवं प्रशासन) राजन प्रसाद, मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी डॉ बी बी करुणामय तथा मुख्य महाप्रबंधक (अनुरक्षण) पी.के.बैसाखिया, मुख्य महाप्रबंधक (ब्लास्ट फर्नेस) एम.पी.सिंह तथा संयंत्र के वरीय अधिकारियों और कर्मचारियों की उपस्थिति में एक समारोह का आयोजन किया गया। समारोह के दौरान ब्लास्ट फर्नेस संख्या-01 के गौरवशाली इतिहास एवं स्वर्णिम भविष्य पर चर्चा की गयी। इसके अलावा ब्लास्ट फर्नेस के विभिन्न अनुभागों को उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया गया और वहां कार्यरत संविदा कर्मियों को भी उनके कार्य क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया गया। इस दिन को यादगार बनाने तथा संयंत्र के अंदर हरियाली और जैव-विविधता बढ़ाने के लिए सभी वरिष्ठ अधिकारियों के द्वारा वृक्षारोपण किया गया। अधिशासी निदेशक (संकार्य) श्री तिवारी सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने ब्लास्ट फर्नेस की टीम को उत्कृष्टता के नित नए बेंचमार्क स्थापित करने का संदेश भी दिया। समारोह का समापन महेंद्र प्रसाद के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

50 वर्ष पुरानी हॉट स्ट्रिप मिल की वाटर पाइप लाइन का नवीनीकरण

बोकारो स्टील प्लांट में 50 वर्ष पुरानी हॉट स्ट्रिप मिल की नवीनीकृत वाटर पाइप लाइन का उद्घाटन अधिशासी निदेशक (संकार्य) बीरेंद्र कुमार तिवारी ने किया। उद्घाटन के समय मुख्य महाप्रबंधक (मैकेनिकल) वी के सिंह, मुख्य महाप्रबंधक (हॉट स्ट्रिप मिल) शरद गुप्ता, प्रकाश कुमार, महाप्रबंधक (कैपिटल रिपेयर-मैक), हॉट स्ट्रिप मिल के महाप्रबंधक राजन कुमार, आर के झा, एस एन भगत, पी के सिंह, ए टंडन के साथ हॉट स्ट्रिप मिल तथा मैकेनिकल अनुरक्षण के वरीय अधिकारी तथा कर्मचारी उपस्थित थे। हॉट स्ट्रिप मिल की वाटर पाइप लाइन लगभग पचास पूर्व वर्ष 1973 में स्थापित की गयी थी। लम्बे समय से लगातार इस्तेमाल के पश्चात हॉट स्ट्रिप मिल के निर्बाध उत्पादन के लिए इनका नवीनीकरण आवश्यक था। इसे देखते हुए मई 2023 में विभिन्न आकार के लगभग 3.5 किलोमीटर वाटर पाइप लाइन के नवीनीकरण का कार्य हॉट स्ट्रिप मिल के मैकेनिकल अनुरक्षण विभाग के महाप्रबंधक आर के झा तथा कैपिटल रिपेयर (मैकेनिकल) के महाप्रबंधक प्रकाश कुमार की देखरेख में शुरू किया गया। इस टीम द्वारा सभी सुरक्षा पहलुओं का ध्यान रखते हुए वाटर पाइप लाइन के नवीनीकरण का कार्य नियत समय पर संपादित किया गया। अधिशासी निदेशक (संकार्य) बीरेंद्र कुमार तिवारी ने इस सफलता पर मैकेनिकल अनुरक्षण विभाग, हॉट स्ट्रिप मिल विभाग तथा इस महत्वपूर्ण कार्य से जुड़े पूरी टीम को बधाई दी है।

हिन्दी ने खोले हैं रोजगार के अनेक द्वार : डॉ. मागधी

केंद्रीय कर एवं सीमा शुल्क विभाग ने धूमधाम से मनाया हिन्दी पखवाड़ा

बेंगलुरू : राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के अनुदेशों का अनुसरण करते हुए बेंगलुरु अंचल स्थित केंद्रीय कर एवं सीमा शुल्क विभागों ने बड़े धूमधाम से राजभाषा दिवस का उत्सव मनाया। दो सत्रों में मनाया गया। प्रथम सत्र का प्रारंभ, केंद्रीय कर, बेंगलुरु के प्रधान आयुक्त रूपम कपूर, सीमा शुल्क, बेंगलुरु अंचल की मुख्य आयुक्त वी उषा एवं विशिष्ट अतिथि डॉ सविता मिश्रा मागधी के दीप प्रज्वलन करने और केंद्रीय कर, प्रधान मुख्य आयुक्त श्रीमती पद्मश्री बाबू के द्वारा मधुर स्वर में गणेश वंदना से कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। दक्षिण केंद्रीय आयुक्तालय के आयुक्त अरविंद माधवन ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। गृहमंत्री के संदेशों को अपरयुक्त नगर सीमा शुल्क अधिकारी मशहूद उर रहमान फारुकी ने साझा किया। सुप्रसिद्ध साहित्यिक विशिष्ट अतिथि डॉ. सविता मिश्रा मागधी ने अपने भाषण में हिन्दी भाषा की ऐतिहासिक एवं वर्तमान महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि हिन्दी केवल बोलचाल की भाषा ही नहीं है, अपितु इसमें रोजगार के अनेक द्वार खुले हैं।

द्वितीय सत्र में विभागीय अधिकारियों ने भूल किसकी विक्रम बैताल के तर्ज पर अनूठा एवं रोचक नाटक प्रस्तुत किया। इस क्रम में काव्य-प्रस्तुतियां भी दी गईं। वीर रस, करुण रस आदि भावों में, रचना आयुक्त, अरुण कुमार चंद्रवंशी अधीक्षक, कुलदीप पांडेय कनिष्ठ अनुवादक, रजनीश शर्मा आशुलिपिक ने काव्य पाठ कर सभी श्रोताओं को द्रवित कर किया। केंद्रीय कर एवं सीमा शुल्क के प्रधान आयुक्तों द्वारा हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रमाणपत्र भी दिए गए। वी उषा ने अपने संभाषण में हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए हिन्दी को अपने दैनंदिनी कार्यों में आत्मसात करने पर बल दिया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में रूपम कपूर ने हिन्दी के अधिकाधिक लेखन व पाठन पर ध्यान देने की आवश्यकता बताई। धन्यवाद ज्ञापन दक्षिण आयुक्तालय के केंद्रीय सहायक आयुक्त प्रवीण टी. विदरी ने किया। सफल मंच संचालन में श्रेय केंद्रीय कार्यालय के वरिष्ठ अनुवादक अधिकारी वाई. सुब्रमण्यम की केंद्रीय भूमिका रही।

'महादान' की भावना से छात्र-छात्राओं ने किए रक्तदान

विशेष संवाददाता

पटना : 'रक्त-दान' महादान है। इस विचार से प्रेरित इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ एडुकेशन ऐंड रिसर्च, बेउर के छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक रक्त-दान किए। प्रथमा ब्लड सेंटर, सगुना के सौजन्य से संस्थान परिसर में लगाए गए 'रक्त-दान शिविर' में विद्यार्थियों ने उत्साह पूर्वक अपना योगदान दिया। संस्थान के 'आइसीयू' में विशेषज्ञों की उपस्थित में इसकी प्रक्रिया संपन्न हुई। आरंभ में संस्थान के निदेशक-प्रमुख डा. अनिल सुलभ तथा प्रथमा के वरीय चिकित्सा अधिकारी डा. नीरज कुमार ने विद्यार्थियों को अपने व्याख्यान से उत्प्रेरित किया। संस्थान के सहस्राब्दी-सभागार में दो छोटी फिल्में भी दिखायी गयीं, जिनमें रक्तदान के महत्त्व को सरलता से समझाया गया है। रक्तदान करने वालों में प्रो. जया कुमारी, आभास, प्रो. मधुमाला, महेश कुमार, सचिन कुमार, सकलैन हैदर, धीरज कुमार, अब्दुल मजीद, रणजीत कुमार, तौकीर हुसैन, रीतिका रंजन, आयुषी कुमारी, शिशुपाल आदि शामिल थे।

चल जंगल चल

चल जंगल चल, चल जंगल चल
जंगल में 'जामुन-पानी' है
वहाँ एक बुढ़िया नानी है
नानी जंगल का मन जाने
सारे किस्से, राज पुराने
जंगल के मन के राजों से
ज्ञान का होगा बहुत बड़ा विस्तार... जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल चल

चल जंगल चल, चल जंगल चल
जंगल का संवाद सरल है
यहीं सुधा है, यहीं गरल है
वन उलझे संप्रेषण का हल
शांत-सा-मधुर-सा हर कोलाहल
अलगावों में जंगल जोड़े
मेरे-तेरे अन्तर्मन के तार... जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल चल

(क्रमशः)

कुमार मनीष अरविन्द

मिथिला वर्णन
हिन्दी साप्ताहिक

देश-विदेश वर्णन

Postal Reg. No.- DNB- 072/2021-23
बोकारो रविवार 08.10.2023
News & E-paper : www.varnanlive.com

प्रधानमंत्री के नेतृत्व में केंद्र सिक्किम के साथ

आफत की बारिश... एसडीआरएफ से केंद्रीय हिस्से की 44.80 करोड़ रु. की दोनों किस्तें मंजूर

ब्यूरो संवाददाता

नई दिल्ली : सिक्किम में बादल फटने से अचानक आई बाढ़ के बाद तबाही को लेकर हर तरफ से मदद के हाथ बढ़ रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार सिक्किम के साथ पूरी एकजुटता से खड़ी है। केंद्र सरकार ने सिक्किम सरकार को हरसंभव सहायता प्रदान करने का आश्वासन दिया है। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने सिक्किम के प्रभावित लोगों को राहत उपाय प्रदान करने में मदद हेतु वर्ष 2023-24 के लिए राज्य आपदा मोचन निधि (एसडीआरएफ) से केंद्रीय हिस्से की 44.80 करोड़ रुपये राशि की दोनों किस्तें जारी करने की मंजूरी दी है। इसके अलावा, ग्लेशियल लेक आउटबर्स्ट फ्लड (जीएलओएफ)/बादल फटने /फ्लैश फ्लड के कारण राज्य को हुई हानि का आकलन करने के लिए गृह मंत्रालय ने एक अंतर-मंत्रालयी केंद्रीय टीम (आईएमसीटी) का गठन किया है, जो प्रभावित क्षेत्रों का दौरा करेगी। इस केंद्रीय टीम के आकलन के आधार पर सिक्किम को निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार राष्ट्रीय आपदा मोदन निधि (एसडीआरएफ) से अतिरिक्त केंद्रीय सहायता की मंजूरी दी जाएगी।

उल्लेखनीय है कि 4 अक्टूबर की सुबह बादल फटने की घटनाओं के कारण तीस्ता नदी के प्रवाह में अचानक हुई वृद्धि के कारण अनेक पुल, राष्ट्रीय राजमार्ग-10 के कुछ हिस्से, चुंगथांग बांध बह गए और सिक्किम की नदी घाटी के ऊपरी इलाकों में कई छोटे शहर और कई बुनियादी ढांचा परियोजनाएं बुरी तरह प्रभावित हुए।

पीआईबी के अनुसार, केंद्र सरकार उच्चतम स्तर पर चौबीसों घंटे सिक्किम की स्थिति पर कड़ी नजर रखे हुए है। केंद्र सरकार इस गंभीर स्थिति से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए राज्य सरकार के प्रयासों में योगदान के लिए समय पर रसद संसाधन जुटाकर पूरी सहायता प्रदान कर रही है। प्रदान की गई रसद सहायता में राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) की पर्याप्त टीमों की तैनाती; भारतीय वायु सेना के हेलीकॉप्टरों और सेना के जवानों सहित आवश्यक खोज और बचाव उपकरण शामिल हैं।

इसके अलावा, बिजली, दूरसंचार और सड़क, राजमार्ग तथा परिवहन मंत्रालयों की तकनीकी टीमें राज्य में क्षतिग्रस्त बुनियादी ढांचे और दूरसंचार नेटवर्क की समय पर बहाली के कार्य में सहायता प्रदान कर रही हैं।

विदित हो कि सिक्किम हादसे में कई लोग असमय काल के गाल में समा गए। खबर लिखे जाने तक सेना के 7 जवानों समेत 25 लोगों के शव बरामद किए जा चुके हैं। वहीं, लापता हुए 110 अन्य लोगों की तलाश जारी है।

42,301 हेक्टेयर भूमि की प्यास बुझाएगी कोयल जलाशय परियोजना

आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडल समिति ने बाकी काम पूरे करने की लागत को दी मंजूरी

बिहार-झारखंड के जिलों को होगा लाभ

विशेष संवाददाता

रांची : कैबिनेट ने बिहार और झारखंड में उत्तरी कोयल जलाशय परियोजना के शेष कार्यों को पूरा करने की संशोधित लागत को अपनी मंजूरी दे दी है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडल समिति ने उत्तरी कोयल जलाशय परियोजना के शेष कार्यों को संशोधित 2,430.76 करोड़ रुपये (केंद्रीय हिस्साः 1,836.41 करोड़ रुपये) की लागत से पूरा करने के लिए जल शक्ति मंत्रालय के जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग के एक प्रस्ताव को अपनी स्वीकृति दी है। जबकि, अगस्त, 2017 में शेष कार्य के लिए पहले स्वीकृत लागत 1,622.27 करोड़ रुपये (केंद्रीय हिस्साः 1,378.60 करोड़ रुपये) की थी। शेष कार्य पूरा होने पर, यह परियोजना झारखंड और बिहार के चार सूखाग्रस्त जिलों में 42,301 हेक्टेयर क्षेत्र को अतिरिक्त वार्षिक सिंचाई प्रदान करेगी।

उल्लेखनीय है कि उत्तरी कोयल जलाशय परियोजना एक अंतर-राज्यीय प्रमुख सिंचाई परियोजना है, जिसका कमान क्षेत्र दो राज्यों बिहार और झारखंड में है। इस परियोजना में कुटकू गांव (जिला लातेहार, झारखंड) के पास उत्तरी कोयल नदी पर एक बांध, बांध के नीचे 96 किमी एक बैराज (मोहम्मदगंज, जिला पलामू, झारखंड), दाहिनी मुख्य नहर (आरएमसी) और बैराज से बाईं मुख्य नहर (एलएमसी) शामिल हैं। बिहार सरकार द्वारा उसके अपने संसाधनों से वर्ष 1972 में बांध के निर्माण के साथ-साथ अन्य सहायक गतिविधियां शुरू की गईं। काम 1993 तक जारी रहा और उस वर्ष बिहार सरकार के वन विभाग द्वारा रोक दी गई। बांध में जमा पानी से बेतला नेशनल पार्क और पलामू टाइगर रिजर्व को खतरा होने की आशंका के कारण बांध का काम रुका हुआ था। काम रुकने के बाद यह परियोजना 71,720 हेक्टेयर में वार्षिक सिंचाई प्रदान कर रही थी। नवंबर 2000 में बिहार के विभाजन के बाद, बांध और बैराज का मुख्य कार्य झारखंड में

हैं। इसके अलावा मोहम्मदगंज बैराज से पूरी 11.89 किमी बाईं मुख्य नहर (एलएमसी) झारखंड में है। हालांकि, दाहिनी मुख्य नहर (आरएमसी) के 110.44 किमी में से पहला 31.40 किमी झारखंड में है और शेष 79.04 किमी बिहार में है। वर्ष 2016 में, भारत सरकार ने परिकल्पित लाभों को प्राप्त करने के लिए परियोजना को संचालित करने के लिए उत्तरी कोयल जलाशय परियोजना के शेष कार्यों को पूरा करने के लिए सहायता प्रदान करने का निर्णय लिया। पलामू टाइगर रिजर्व के मुख्य क्षेत्र को बचाने के लिए जलाशय के स्तर को कम करने का निर्णय लिया गया। परियोजना के शेष कार्यों को 1622.27 करोड़ रुपये के अनुमानित व्यय पर पूरा करने के प्रस्ताव को अगस्त 2017 में केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा अनुमोदित किया गया था।

इसके बाद, दोनों राज्य सरकारों के अनुरोध पर, कुछ अन्य घटकों को परियोजना में शामिल करना आवश्यक पाया गया। परिकल्पित सिंचाई क्षमता प्राप्त करने के लिए तकनीकी दृष्टि से आरएमसी और एलएमसी की पूर्ण लाइनिंग को भी आवश्यक माना गया। इस प्रकार, गया वितरण प्रणाली के कार्य, आरएमसी और एलएमसी की लाइनिंग, रास्ते में संरचनाओं की रीमॉडलिंग, कुछ नई संरचनाओं का निर्माण और परियोजना से प्रभावित परिवारों (पीएएफ) के राहत एवं पुनर्वासन (आर एंड आर) के लिए एकबारगी विशेष पैकेज को अद्यतन लागत अनुमान में प्रदान किया जाना था। तदनुसार, परियोजना का संशोधित लागत अनुमान तैयार किया गया था। शेष कार्यों की लागत 2430.76 करोड़ रुपये में से केंद्र 1836.41 करोड़ रुपये उपलब्ध कराएगा।

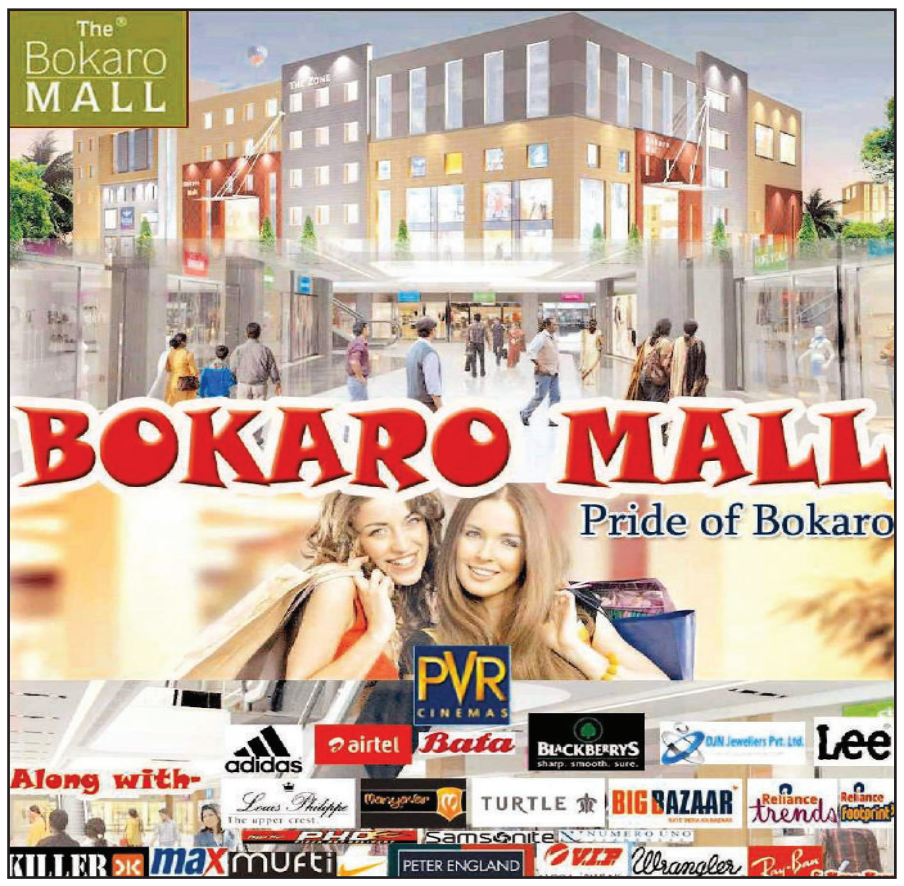

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी विजय कुमार झा द्वारा डीबी कॉर्प लिमिटेड, भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, गोविन्दपुर रोड, जीके आश्रम, धनबाद से मुद्रित एवं सेक्टर-3बी/94, बोकारो स्टील सिटी (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक : विजय कुमार झा***
प्रबंध संपादक : **कंचन झा**, दिल्ली ब्यूरो : **कैप्टन संजय,** फोन/फैक्स : (06542) 246899, E-mail : mithilavarnan@gmail.com, आरएनआई. पंजीयन संख्या : 48973/89 (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिये जिम्मेवार)